नन्हा शेर बाघा

कहानी व चित्र
सुपूर्णा सिन्हा

एकलव्य का प्रकाशन

मेरे पिता सुरजीत सिन्हा की याद में
जिन्होंने मुझे अनजानी राहों पर चलने
का साहस और प्रेरणा दी

आमुख

बच्चे जानवरों से बहुत प्यार करते हैं। उनके आस-पास के साधारण जानवर – एक दूसरे के पीछे दौड़ती गिलहरियाँ, अपने रोएँ सँवारती बिल्लियाँ, इधर-उधर रेंगती चींटियाँ और सड़क पर पलते कुत्ते – सभी बच्चों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। जिन जानवरों से वे कम मिल पाते हैं – जैसे किताबों या चिड़ियाघरों में दिखने वाले खूँखार शेर, विशाल हाथी या हरे घने जंगलों में विचरने वाले रोबीले बब्बर शेर – उनसे भी वे बहुत आकर्षित होते हैं।

बच्चे की बेहद उर्वर काल्पनिक दुनिया में बगीचे की हरियाली घने जंगल में तब्दील हो सकती है और एक साधारण बिल्ली शेर बन जाती है।

इस कहानी में एक लड़की एक बिल्ली को देखती है और फिर उसके सपने में वह बिल्ली जंगल की शेरनी बन जाती है। जब शेरनी दहाड़ती है तो जंगल के सारे जानवर डरकर तितर-बितर हो जाते हैं। जिसे जहाँ सूझे छिप जाते हैं। जानवरों को अपने आसपास की दुनिया में घुल-मिलकर छिपने की कला खूब आती है। वे अपने रंग-रूप के मुताबिक अपने छिपने की जगह ढूँढ़ लेते हैं, और फिर जब तक खतरा न टले तब तक बिल्कुल चुपचाप पड़े रहते हैं।

पर जंगल के कोई भी जानवर शेरनी के बच्चे बाघा को डरावना नहीं मानते। यह बात बाघा को बहुत निराश और दुखी कर देती है। ठीक जैसे बच्चे अपने बड़ों की नकल उतारते हैं, बाघा भी अपनी माँ की तरह जानवरों को डराने की कोशिश करता है। पर बाघा के दहाड़ने पर न तो मयुर नाम का मोर, न मृग नाम का हिरण और न ही हनुमान नाम का बन्दर उससे डरते हैं। बेचारा बाघा! आखिरकार एक छुटकू गिलहरी कुल्लू को डराने में कामयाब होने पर वह भागा-भागा अपनी माँ के पास जाता है, उसे यह बात बताने।

बच्चे इस कहानी के माध्यम से देख पाएँगे कि हम में और जानवरों में कितनी समानताएँ हैं। छोटे बच्चों की तरह नन्हे जानवर भी नाज़ुक होते हैं और उन्हें सुरक्षा की ज़रूरत होती है। माँएँ अपने बच्चों की देखभाल करती हैं। जानवरों के बच्चे भी अपने बड़ों की नकल करते हुए बड़े होते हैं। बच्चों के बड़े होने की और दुनिया में अपनी यथोचित जगह लेने की कठिन प्रक्रिया में अनुकरण एक महत्वपूर्ण चरण है। जब बाघा बड़ा हो जाएगा तो जंगल उसकी दहाड़ों से गूँजेगा और सारे जानवर डर से काँपेंगे। जब रोशनी बड़ी हो जाएगी.... चलिए, हम इस बात का इन्तज़ार कर लेते हैं!

इस किताब को कई स्तरों पर पढ़ा जा सकता है। छोटे बच्चे चित्र देखते हुए इसके पन्ने पलट सकते हैं। कोई बड़ा कहानी पढ़कर सुना सकता है (कहानी में नाटकीयता लाने से बच्चे का ध्यान बँधा रहता है)। थोड़े बड़े बच्चे खुद ही इसे पढ़ सकते हैं। और कुछ बच्चे चित्रों और लिखे हुए, दोनों का मज़ा खुद ही ले पाते हैं।

मैं अरविन्द गुप्ता, पुलक बिस्वास और विशाखा चन्चानी की शुक्रगुज़ार हूँ, जिन्होंने मेरे काम को सराहा और मुझे प्रोत्साहन दिया।

मैं अपने पति, जोसेफ सैम्युएल की चिर-ऋणि हूँ, जिन्होंने हमेशा मुझे मदद और उत्साह दिया है।

- सुपूर्णा सिन्हा

एक दिन बाबा, माँ और रोशनी सोने के कमरे की खिड़की में से अपने बगीचे को देख रहे थे। बाबा ने अचानक देखा कि एक बिल्ली आकर उनके बगीचे में घुसी।

बाबा और माँ के वहाँ से चले जाने के बाद भी रोशनी अकेले ही एकटक बिल्ली को देखती रही। बिल्ली बहुत सुन्दर थी। पूरे शरीर पर रोएँ थे और उस पर धारियाँ – बिल्कुल किसी शेर की तरह।

दोपहरी की जगमग धूप रोशनी की आँखों में नींद ले आई। रोशनी ने देखा एक हरे-भरे जंगल में एक विशाल धारीदार शेरनी बैठी है। उसने दहाड़ मारा, **"होआ–ऊँ!"** जंगल के सभी जानवर डर के मारे थर-थर काँपने लगे।

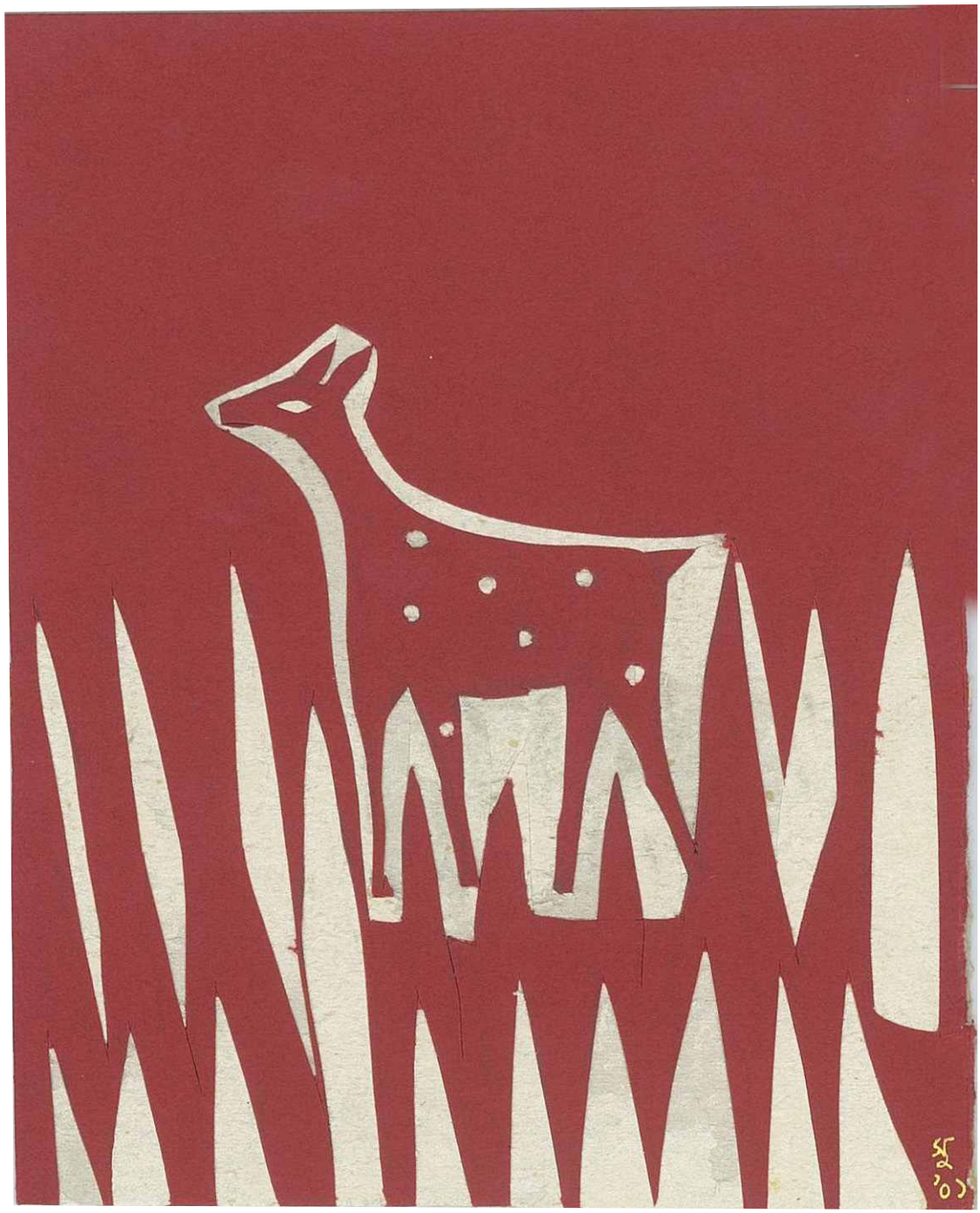

“मृग” नाम का हिरण सुनहरी-कत्थई घास के पीछे छिप गया।

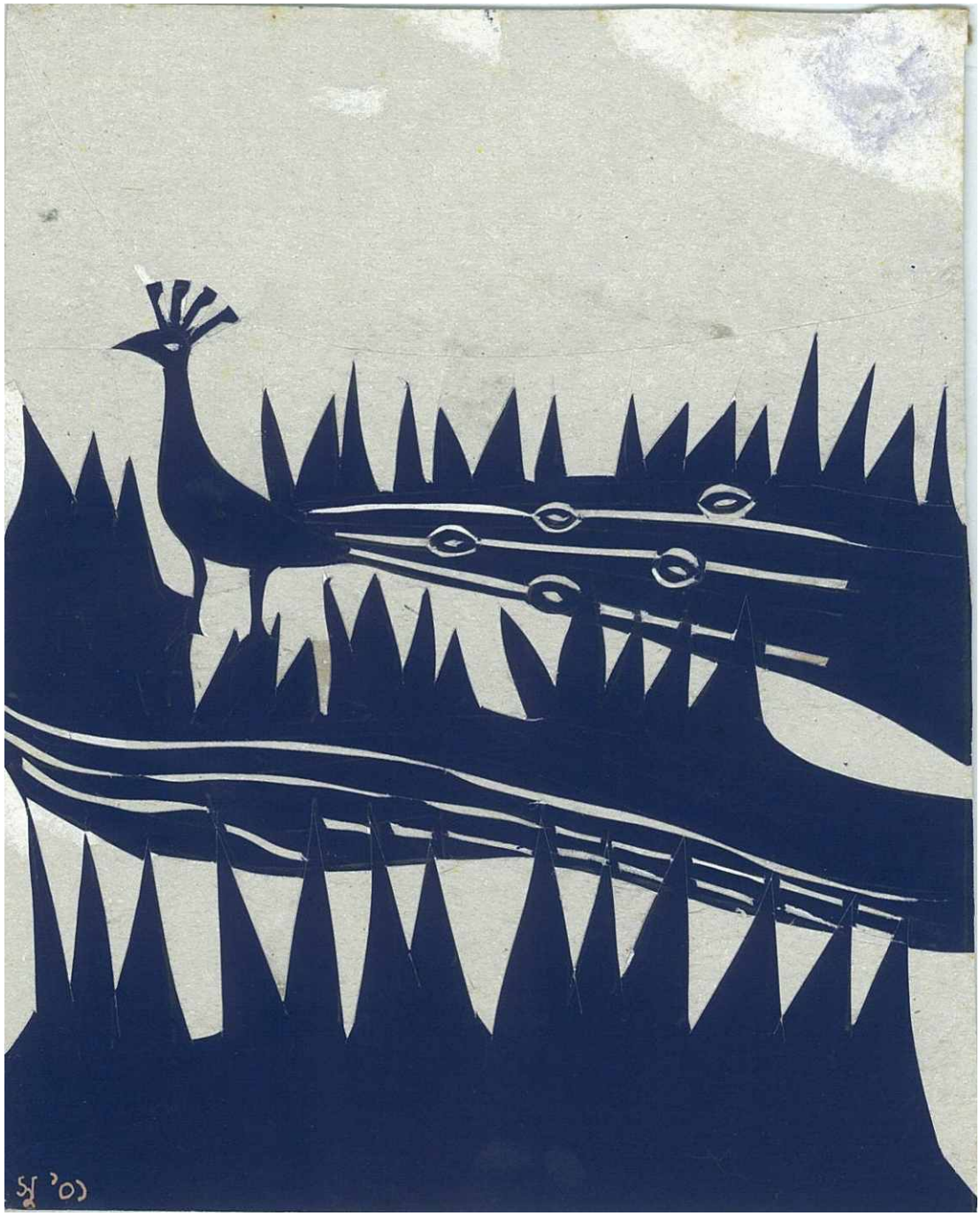

“मयूर” नाम का मोर नदी किनारे की हरी घास में दुबक गया।

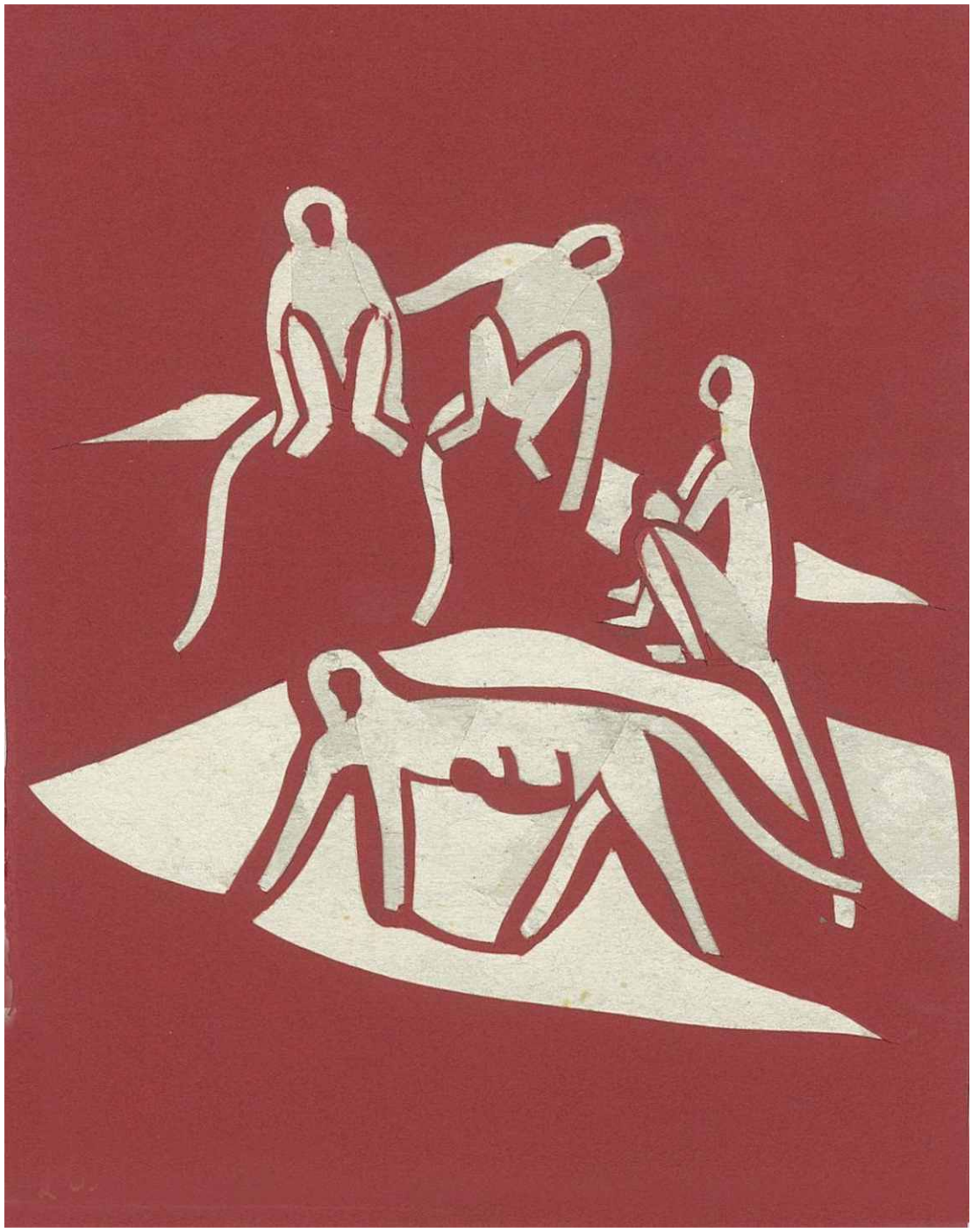

“हनुमान” नाम का बन्दर और उसके दोस्त अपना खेल छोड़ झटपट रेतीले तट पर जा छिपे। बच्चे अपनी माओं से चिपक गए।

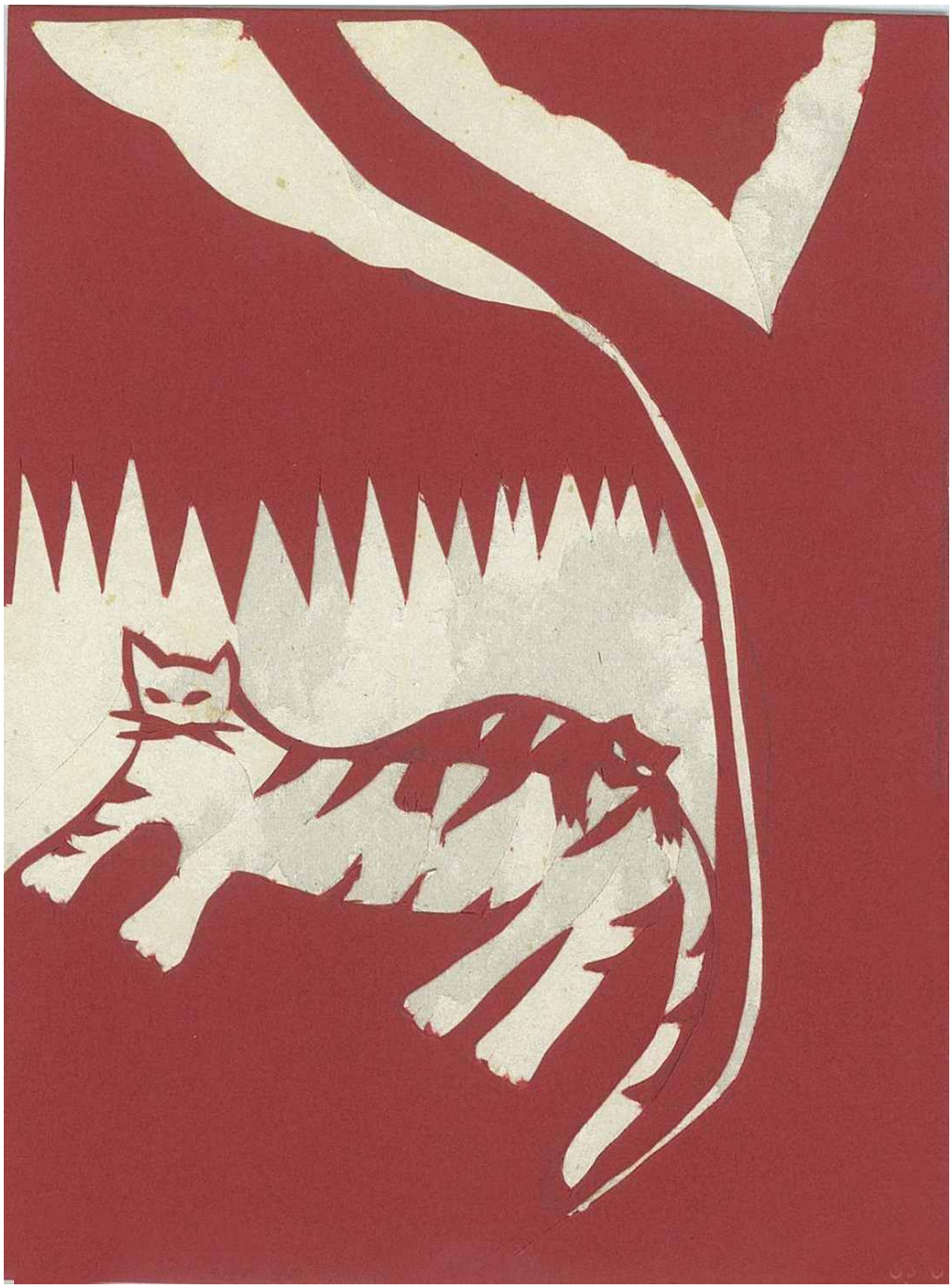

शेरनी एक पेड़ के नीचे आराम करने पसर गई। उसके बच्चे बाघा को पता था कि उसकी माँ की दहाड़ से जंगल के सारे जानवर डरकर छिप जाते हैं। यह बात सोच-सोचकर उसे बहुत गर्व होता था। बाघा ने सोचा वह भी अपनी माँ की तरह बाकी सब जानवरों को डराएगा। पर चारों ओर कोई दिखाई नहीं दिया।

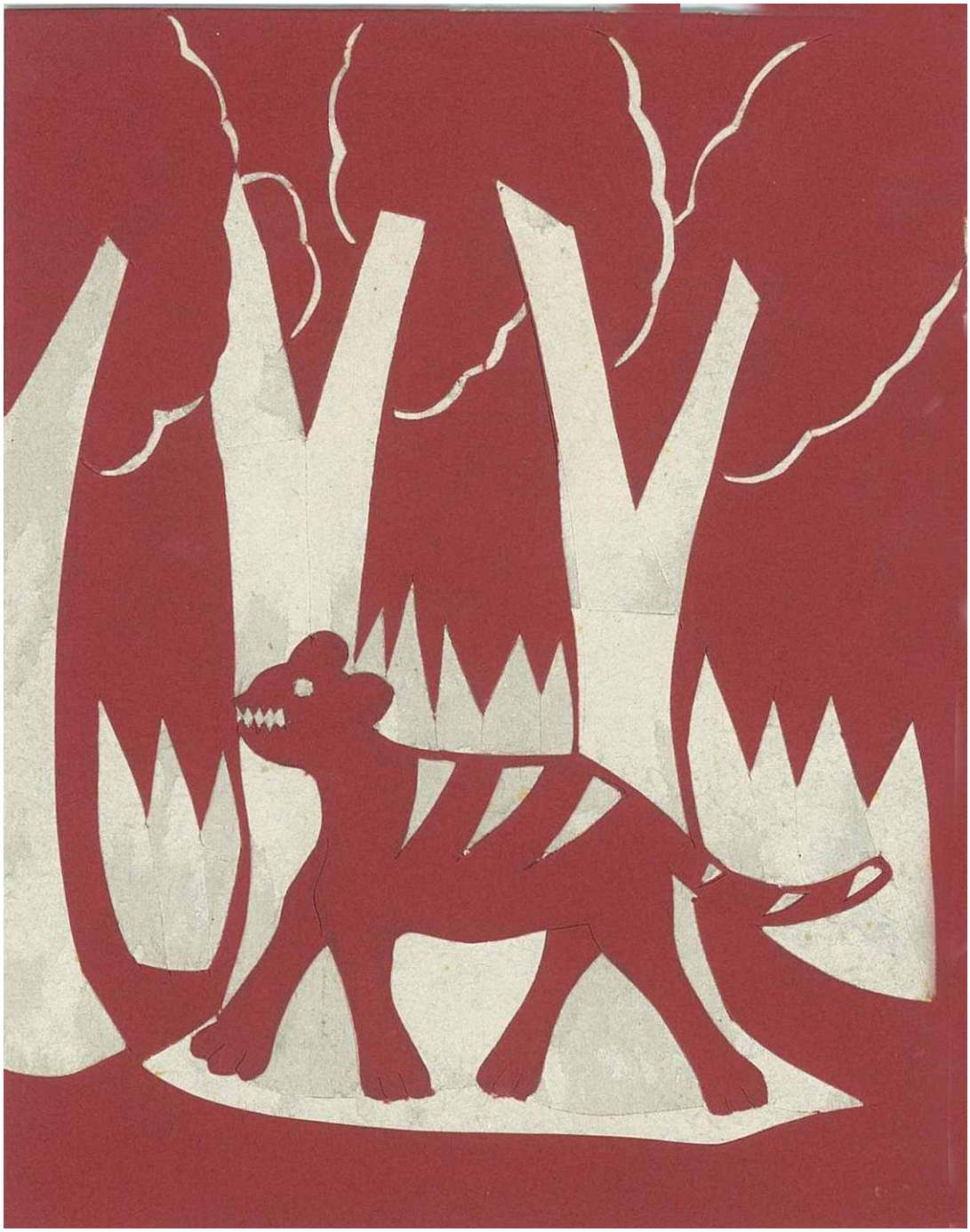

माँ के सो जाने के बाद बाघा चुपचाप जानवरों को डराने चल दिया।

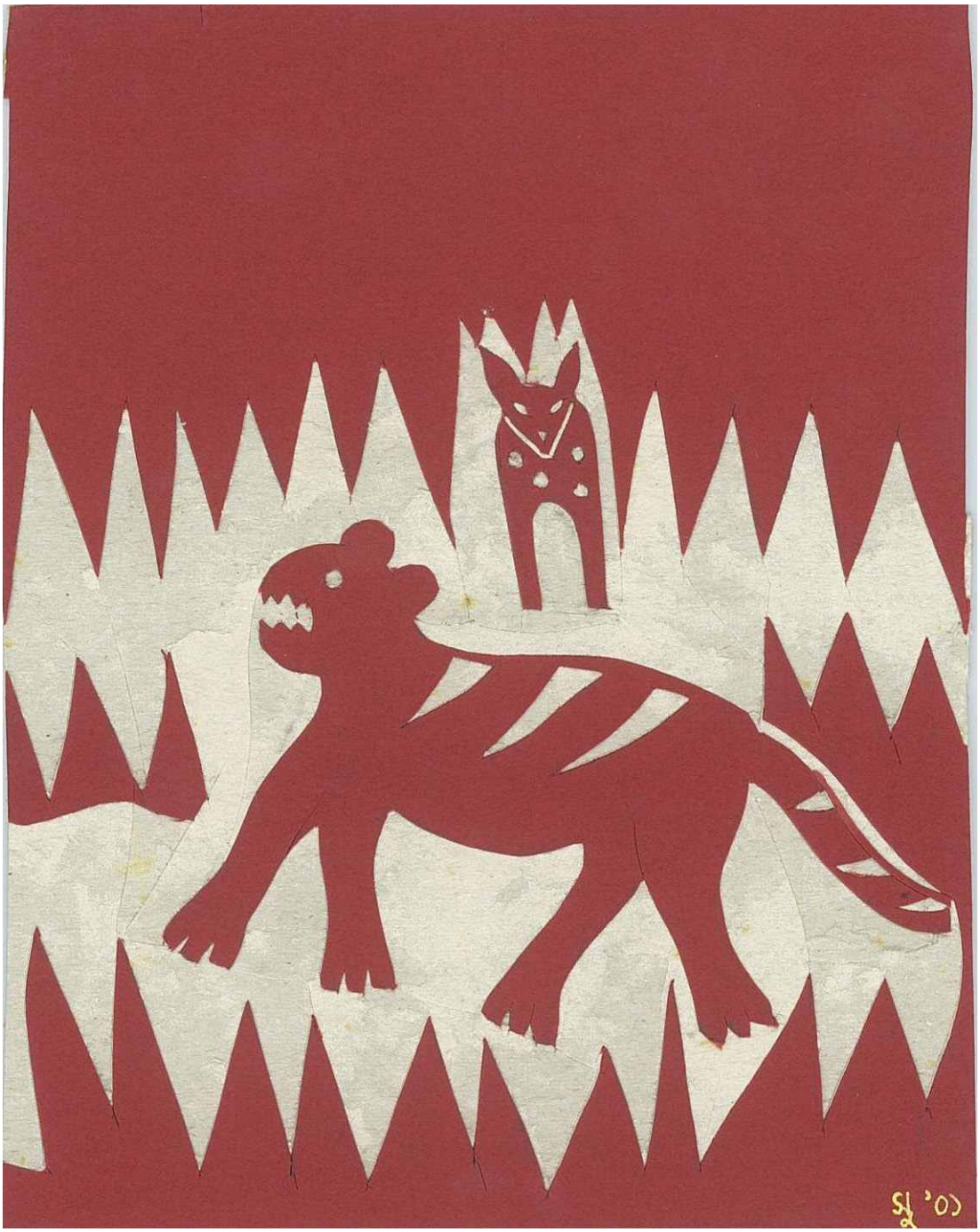

पर जंगल के बीच चलते हुए उसने देखा कि मृग सूखी घास की ओट से बाहर निकल आया।

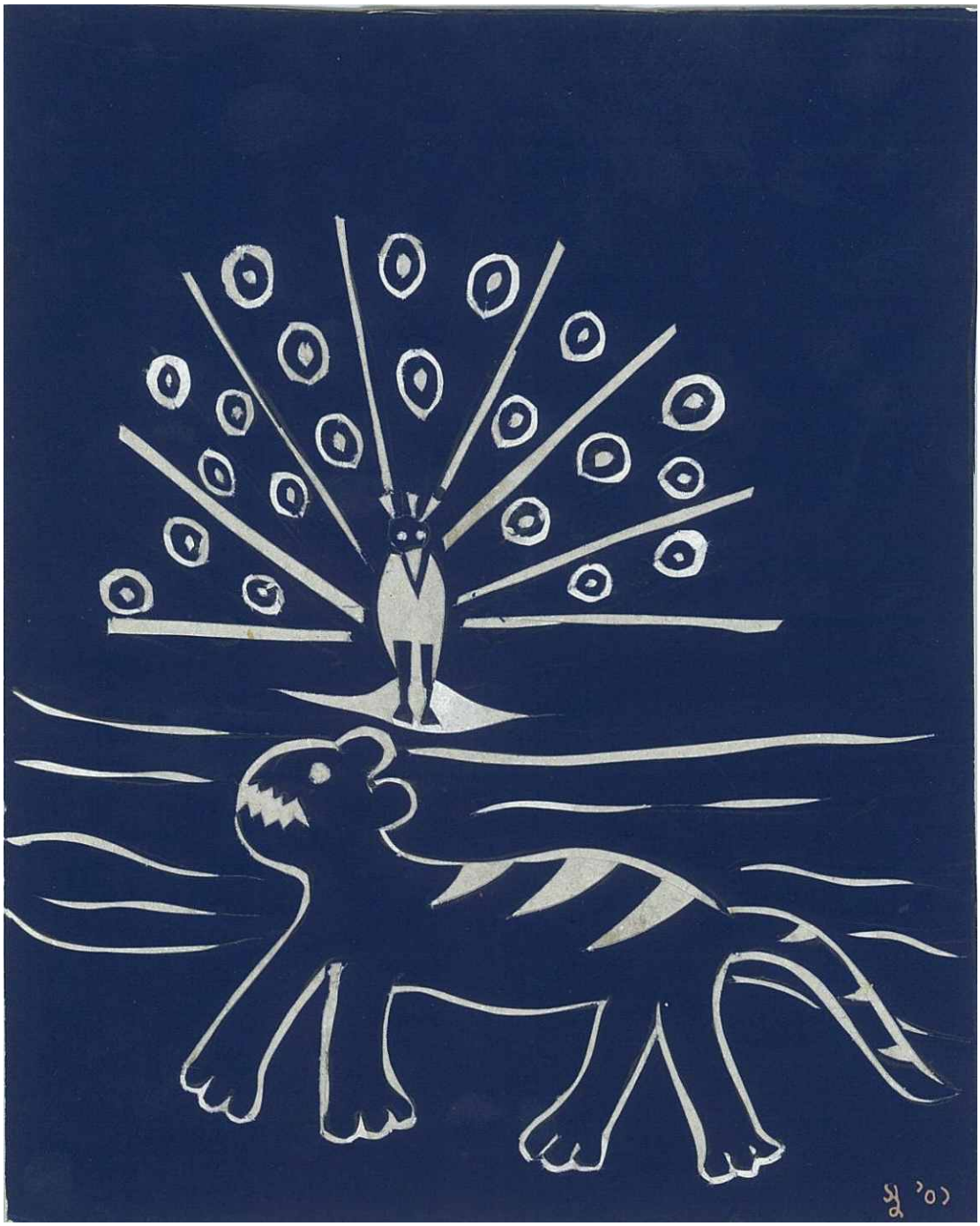

मयुर नदी किनारे नाचने लगा।

हनुमान और उसके दोस्त रेत छोड़ पेड़ों पर झूलने और खेलने लगे। किसी को डर नहीं लगा।

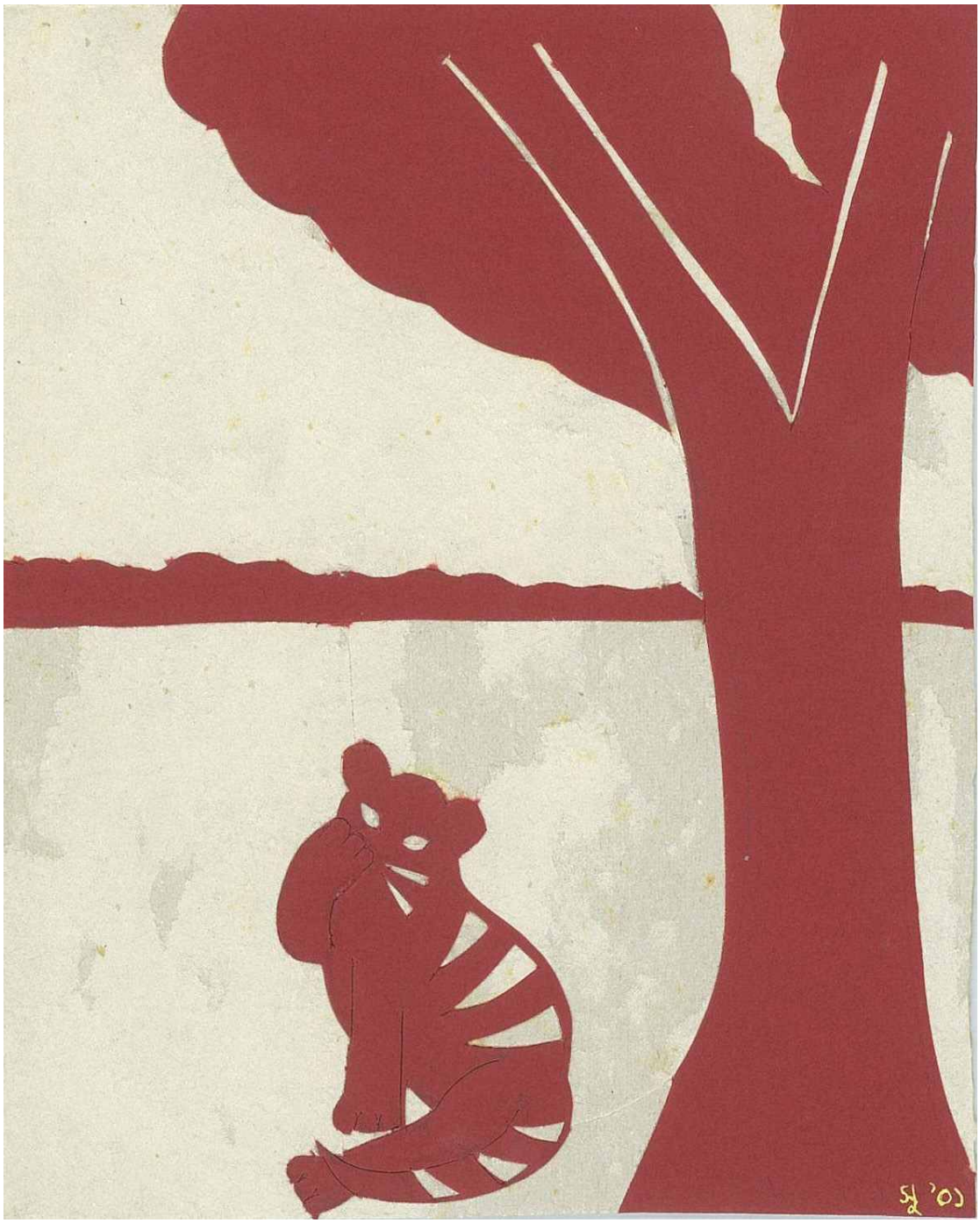

बाघा को बहुत दुख हुआ। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा।

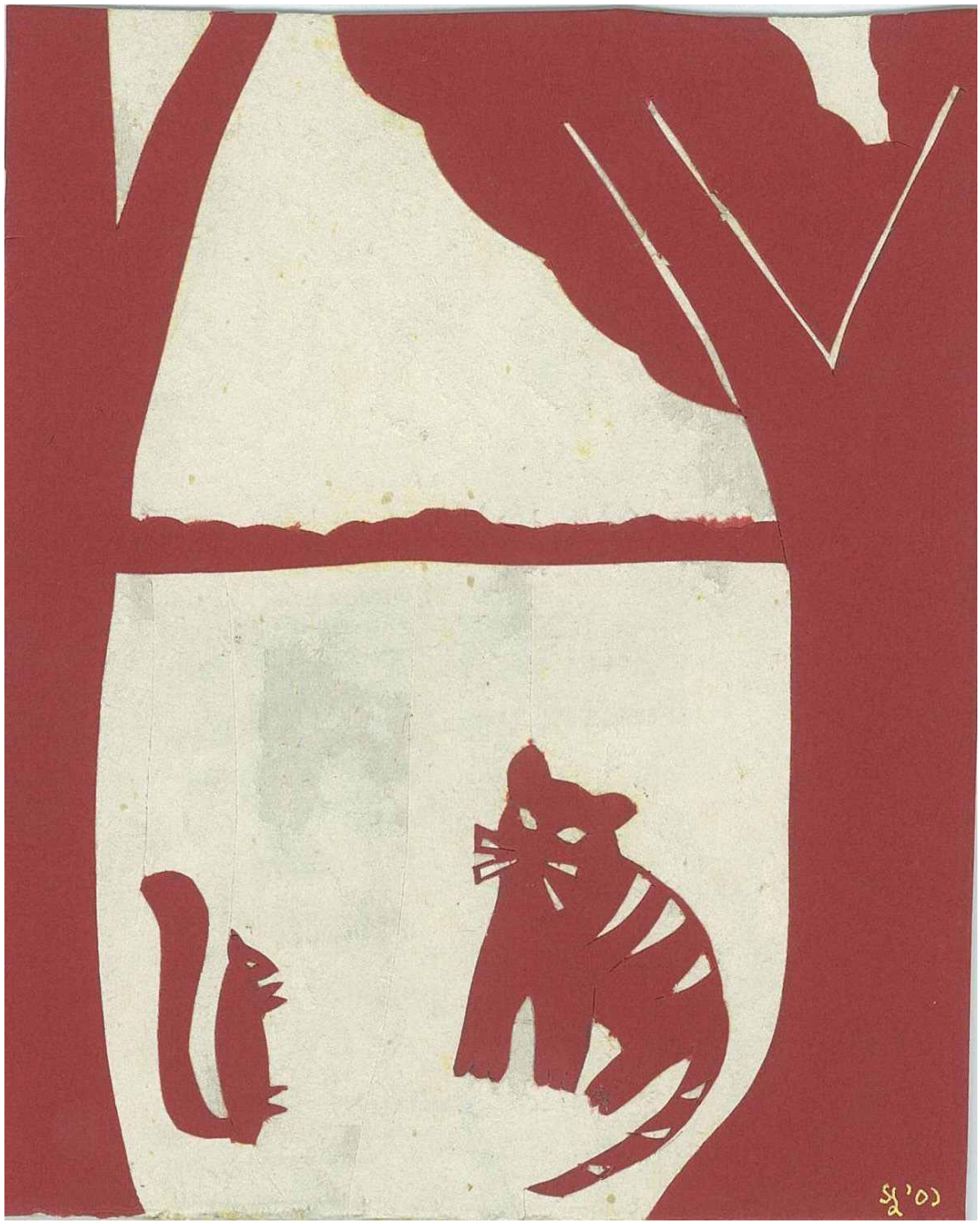

अचानक पास के पेड़ से एक बादाम नीचे गिरा। उसके पीछे-पीछे आई "कुल्लू" नाम की गिलहरी। पर वहाँ बाघा को देखकर वह बादाम-वादाम सब भूल गई।

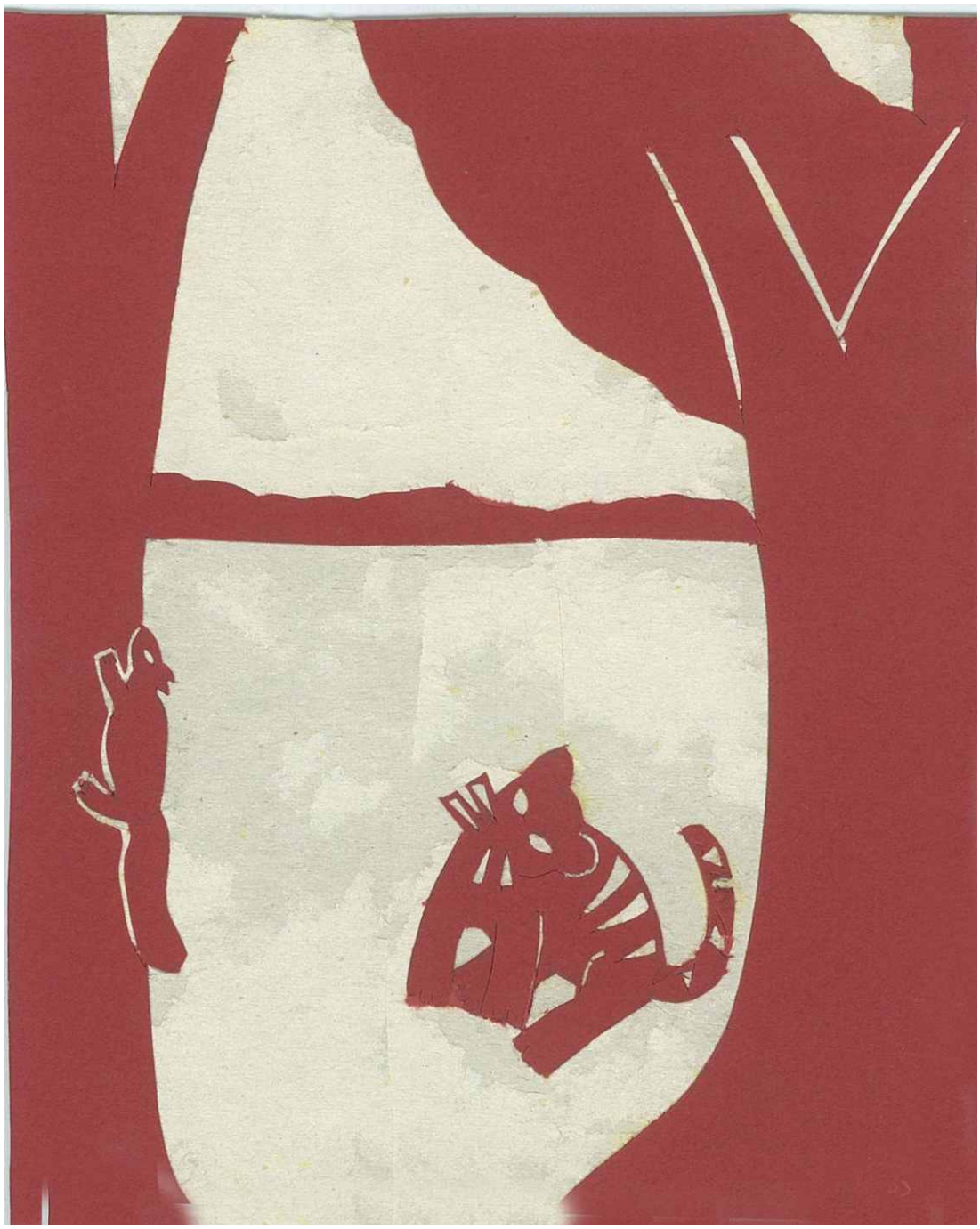

कुल्लू सरपट वापस पेड़ पर चढ़ गई।

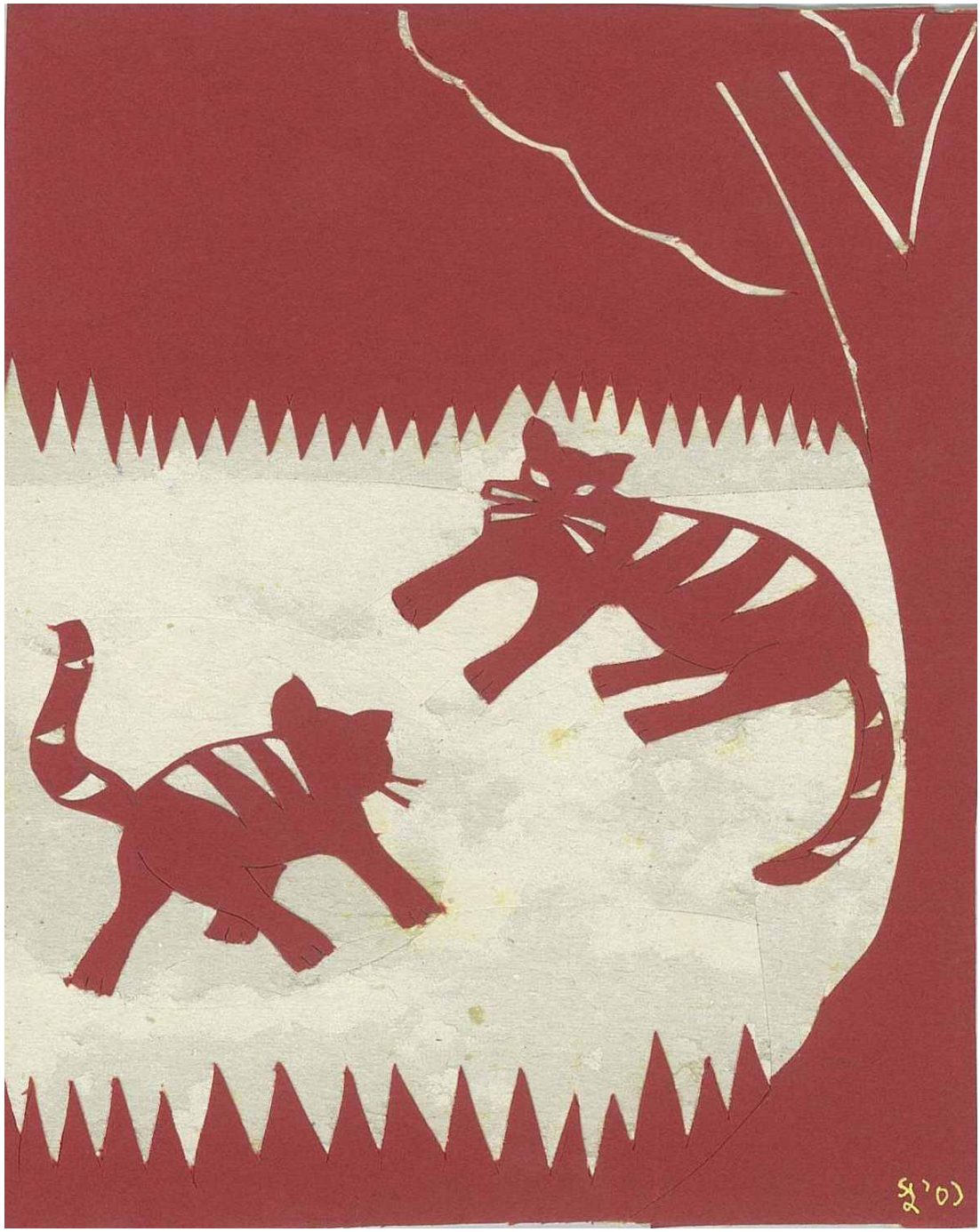

बाघा का मन खुशी से झूम उठा। वह भागा-भागा अपनी माँ को जाकर बताने लगा कि कैसे कुल्लू गिलहरी उसे देखकर डर के मारे भाग गई।

रोशनी की नींद टूट गई। आँखें मलते हुए उसने देखा बगीचे में एक बड़े-से पेड़ के नीचे बैठी है एक बिल्ली।

समाप्त